ISSN:2583-8849



डॉ. मनीषा शर्मा
नाथद्वारा, राजस्थान

चुप्पी

मुँह पर धरली चुप्पी मैंने.....*
किससे अपना मन खोलूं
किससे मन की बातें बोलूँ
बचपन में थीं माँ बोलीं
मुझसे अपना मन खोलो
जो है मन में मुझको बोलो
माँ से जब मन अपना खोला
छिपा था भीतर सबकुछ बोला
माँ बोली ये ठीक नहीं है
दुनिया की यह रीत नहीं है
लड़की हो ऐसा मत बोलो
सोचो भी तो पहले तोलो
तुमसे ये सरोकार नहीं है
कुछ भी सोचो अधिकार नहीं है
मुँह पर धरली चुप्पी मैंने.....
विवाह हुआ तो पति जी बोले
मुझसे अपना मन खोलो
जो है मन में मुझको बोलो
फिर से अपना मन खोला
थोड़ा सोचसमझकर बोला
सुनी पति ने मन की बात
बोले तुम हो औरत जात
कुछ सीमायें रखा करो
अपनी हद में रहा करो
मुँह पर धरली चुप्पी मैंने.....
कुछ दिन बीते बच्चे बोले
चुप्पी तोड़ो माँ तुम बोलो
अपने मन की गाँठे खोलो
लगा मुझे अब मैं बोलूँगी
जितनी परतें सब खोलूँगी
मुक्त गगन की पंछी बनकर
आज मुखर सी मैं हो लूँगी
बच्चे बोले जब मैं बोली
माँ तुम भी हो कितनी भोली
गया समय अब नया रंग है
आज सभी का नया ढंग है
तुम न इसे समझ पाओगी
समझ तुम्हारी बहुत तंग है
मुँह पर धरली चुप्पी मैंने.....
एक दिन आया आँखे बन्द
भीतर दब गए सारे छन्द
शब्दों भावों की दुनिया संग
सांसें भी पड़ गयी थीं मन्द
ऊपर पहुँची यम जी बोले
तुम सृष्टि की अनुपम रचना
रोके क्यों हो अपने वचना
कोई बंधन यहाँ नहीं है
कुछ ना यहाँ गलत-सही है
सोचा चुप्पी तोड़ ही डालूँ
मन की बातें बोल ही डालूँ
खोला मुँह तो मैंने देखा
मुँह के भीतर जीभ नहीं थी
बस मोटी जंजीर पड़ी थी
शब्द खून से सने पड़े थे
भाव छितर कर वहीं खड़े थे
अब कैसे उनको सहलाऊँ
मन पीड़ा कैसे बहलाऊँ
कोई ना उपाय बचा था
शब्द ना कोई हाय बचा था